

डॉ. टिबेरियस राटा, एज्रा- नहेमायाह

सत्र 10, नहेमायाह 9-10

© 2024 टिबेरियस राटा और टेड हिल्डेब्रांट

यह एज्रा और नहेमायाह पर डॉ. टिबेरियस राटा की शिक्षा है। यह सत्र 10 है, नहेमायाह 9-10।

कृपया अपनी बाइबिल में नहेमायाह अध्याय 9 खोलें। अध्याय 9 में, केंद्रीय उद्देश्य ईश्वर और उसने क्या किया है।

दरअसल, यह अध्याय संभवतः बाइबल में दर्ज सबसे लंबी प्रार्थनाओं में से एक है, जो पद 1 से शुरू होती है।

1 इसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास और टाट ओढ़े हुए, और सिर पर मिट्टी डाले हुए इकट्ठे हुए। **2** और इस्राएली सब विदेशियों से अलग ~~हो~~ गए, और खड़े होकर अपने पापों और अपने पूर्वजों के अधर्म के कामों को मान लिया। **3 और वे अपने स्थान पर खड़े होकर** दिन के एक चौथाई भाग तक यहोवा अपने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते रहे ; और एक चौथाई भाग तक उन्होंने पाप स्वीकार किया और यहोवा अपने परमेश्वर की आराधना की।

और फिर पद 4 में, हमारे पास लेवियों और पाँच लोगों का एक समूह है। और बाइबल कहती है, उन्होंने कहा, खड़े हो जाओ और अपने परमेश्वर यहोवा को सदा सर्वदा धन्य कहो। धन्य हो तेरा महिमामय नाम, जो सब आशीषों और स्तुति से ऊपर है।

और फिर आपके पास सीधी भाषा पर स्विच होता है।

6 “केवल तू ही यहोवा है। तू ने स्वर्ग को, अर्थात् स्वर्ग के स्वर्ग को, और उसकी सारी सेना को, अर्थात् पृथ्वी और उस पर जो कुछ है, और समुद्र और जो कुछ उस में है, बनाया है; और तू उन सब की रक्षा करता है; और स्वर्ग की सेना तेरी आराधना करती है।

याद रखें, एज्रा और नहेमायाह दोनों प्रार्थना करने वाले पुरुष और महिला थे। और अब नेता उनके उदाहरणों का अनुसरण करते हैं। और जेवनार के दिन के बाद उपवास के दिन आए।

और अब आपके पास लोग हैं जो कानून पढ़ रहे हैं, अपने पापों को स्वीकार कर रहे हैं, भगवान की पूजा कर रहे हैं। और इस प्रार्थना में जो वे यहां अध्याय 9 में शुरू करते हैं, फिर से, सब कुछ भगवान के चारों ओर घूमता है। यह एक तरह से धार्मिक पाठ की तरह है।

ईश्वर कौन है? प्रथम, ईश्वर शाश्वत है। वह अनादि से अनन्त तक है। उसका न कोई आरंभ है, न कोई अंत।

फिर, यह कोई नई अवधारणा नहीं है। लोग यह पहले से ही जानते हैं। सुसंगत विषय से पता चलता है कि ईश्वर सच्चा ईश्वर और निर्माता ईश्वर है।

1 इतिहास 16, भजन 90, प्रकाशितवाक्य 1:8. ईश्वर न केवल शाश्वत है, बल्कि स्वयं ईश्वर के अलावा कोई भी सच्चा ईश्वर नहीं है। आप अकेले भगवान हैं। आप अकेले यहोवा हैं।

यह ईश्वर की विशिष्टता की जोरदार पुष्टि है। इतना ही नहीं, बल्कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता परमेश्वर है। आपके पास स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र शब्द हैं।

ये सभी शब्द लोगों को उत्पत्ति 1 की याद दिलाते होंगे, जो सृष्टि वृत्तांत के बारे में बात करता है। ईश्वर न केवल शाश्वत है, वह एकमात्र सच्चा ईश्वर है। वह सृष्टिकर्ता ईश्वर है।

लेकिन वह वही है जो अपनी सृष्टि का पालन-पोषण करता है। और परिणामस्वरूप, सृष्टि को ईश्वर की आराधना करनी चाहिए। और प्रार्थना यह दर्शाती रहती है कि ईश्वर न केवल महान और स्तुति के योग्य है।

फिर से, शुरुआत में वापस। आपका महिमामय नाम धन्य है, जो सभी आशीषों और स्तुति से बढ़कर है। आप भगवान हैं।

आप अकेले हैं। तू ने स्वर्ग और स्वर्ग के स्वर्ग को बनाया है। इतना ही नहीं, बल्कि यह जारी है, परमेश्वर ने इस्राएल को चुना और उसकी देखभाल की।

भले ही कुछ लोगों को ईश्वर के चयन का यह विचार पसंद नहीं है, चुनाव का सिद्धांत पवित्रशास्त्र में हमेशा मौजूद है। और उनकी प्रार्थना में उन्हें इसकी याद दिलायी जाती है।

7 तू ही यहोवा है, वह परमेश्वर जिसने अब्राहम को चुन लिया, और उसे कसदियों के ऊर से निकाल लाया, और उसका नाम इब्राहीम रखा। **8** तू ने उसके मन को अपने साम्हने विश्वासयोग्य पाया, और उसके साथ यह वाचा बान्धी, कि उसके वंश को कनानी, हिती, एमोरी, परिज्जी, यबूसी, और गिर्गाशियों का देश दूंगा। और तू ने अपना वचन निभाया है, क्योंकि तू धर्मी है।

तो फिर, प्रार्थना में, वे भगवान की स्तुति करना जारी रखते हैं।

इस मामले में, वह व्यक्ति होने के कारण जिसने इब्राहीम को चुना। फिर, चुनाव का सिद्धांत बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने इब्राहीम को इसलिए नहीं चुना कि वह कौन था, बल्कि इसलिए चुना कि परमेश्वर कौन था।

और वह परमेश्वर है जिसने अपना वादा निभाया। और वह परमेश्वर है जो देखता है, श्लोक 9 से शुरू करते हुए,

9 "और तूने मिस्र में हमारे पूर्वजों के दुःख को देखा और लाल सागर के पास उनकी पुकार सुनी, **10** और फिरौन और उसके सब कर्मचारियों और उसके देश के सब लोगों के विरुद्ध चिन्ह और चमत्कार किए, क्योंकि तू जानता था कि वे हमारे पूर्वजों के विरुद्ध अभिमान से काम करते थे। और तूने अपना ऐसा नाम किया, जैसा आज तक विद्यमान है। **11** और तूने उनके सामने समुद्र

को विभाजित कर दिया,

तो अब, प्रार्थना इतिहास से होकर गुज़रती है। और अब अब्राहम से निर्गमन की घटना तक पहुँचती है, जो फिर से इस्राएलियों के लिए परमेश्वर का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है।

जब भी आप पुराने नियम में देखते हैं, तो वे ईश्वर के बारे में बात करते हैं। अंततः, वे उस ईश्वर का उल्लेख करेंगे जो उन्हें मिस्र से बाहर लाया था। निर्गमन की घटना बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है।

तूने मिस्र में हमारे पूर्वजों के कष्टों को देखा, और लाल समुद्र के पास उनकी चिल्लाहट सुनी, और फिरौन और उसके सब कर्मचारियों और उसके देश के सब लोगों के विरुद्ध चिन्ह और चमत्कार किए। क्योंकि तू जानता था, कि उन्होंने हमारे पूर्वजों के विरुद्ध अहंकार से काम किया, और तूने अपना नाम आज तक बढ़ाया, और तूने उनके साम्हने समुद्र को दो भागों में बाँट दिया।

इसलिए वे समुद्र के बीच से सूखी ज़मीन पर चले गए, और आपने उनके पीछा करने वालों को गहरे पानी में पत्थर की तरह फेंक दिया। न केवल भगवान ने उन्हें निर्गमन में जीत दिलाई, वैसे, एक महान ऐतिहासिक घटना, बल्कि भगवान ने उन्हें जंगल में ले जाया।

श्लोक 12, आपने दिन में बादल के एक खंभे द्वारा उनका नेतृत्व किया, और रात में आग के एक खंभे द्वारा उनके लिए रास्ता रोशन किया जिस पर उन्हें जाना चाहिए।

फिर, भगवान सिर्फ एक भगवान नहीं है जो उन्हें बुलाता है। परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो हर दिन उनकी अगुवाई करता है।

13 तू सीनै पहाड़ पर उतर आया, और स्वर्ग में से उन से बातें की, और उनको सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, अच्छी विधियाँ, और आज्ञाएं दीं, **14** और तू ने उनको अपना पवित्र विश्रामदिन बताया, और अपने दास मूसा के द्वारा उनको आज्ञाएं और विधियाँ और व्यवस्था दी।

फिर, यह एक तरह का इतिहास का पाठ है, लेकिन यह प्रार्थना के रूप में है। और आप यहाँ जो देख रहे हैं वह ईश्वर के बीच एक विरोधाभास है जो विश्वासयोग्य है और जो लोग विश्वासयोग्य नहीं हैं।

यह श्लोक १५ से शुरू होकर कहता है,

१५ तूने उनकी भूख मिटाने के लिए स्वर्ग से उन्हें रोटी दी और उनकी प्यास बुझाने के लिए चट्टान से पानी निकाला, और तूने उनसे कहा कि वे उस देश पर अधिकार करने के लिए जाएँ जिसे देने की शपथ तूने उन्हें ली थी।

और आप सोच सकते हैं, अच्छा, अब आगे क्या हुआ, और लोगों ने आज्ञा का पालन किया।

लेकिन नहीं, परमेश्वर की विश्वासयोग्यता लोगों की विश्वासहीनता से भिन्न है। श्लोक 16,

16 से प्रारम्भ “परन्तु उन्होंने और हमारे पुरखाओं ने अभिमान किया, और हठ करके तेरी आज्ञाएं न मानीं। **17** उन्होंने आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया और उन आश्चर्यकर्मों को भी स्मरण न रखा जो तू ने उनके बीच किए थे, परन्तु उन्होंने हठ किया, और मिस्र में अपनी दासता में लौट जाने के लिये एक प्रधान नियुक्त कर दिया। ²परन्तु तू क्षमा करने को तत्पर, दयालु, दयालु, क्रोध करने में धीमा और अटल प्रेम वाला ईश्वर है, और तू ने उन्हें नहीं त्यागा।

देखिए, भजन 115 के अनुसार, अंधे, बहरे और गूंगे राष्ट्रों के झूठे देवताओं के विपरीत, यहोवा एक ईश्वर है जो देखता है।

परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो चमत्कारी चिह्नों और चमत्कारों के माध्यम से अपने लोगों की सुनता है और उन्हें बचाता है। वह एक ऐसा परमेश्वर है जो जंगल में अगुवाई करता है, उन्हें स्वर्ग से मन्ना और चट्टान से पानी देता है। और भले ही वे आज्ञा न मानें, परमेश्वर उन्हें नहीं छोड़ता।

और हम निर्गमन की कहानी जानते हैं कि मूसा अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करता है, और परमेश्वर उन्हें नष्ट करने से पीछे हट जाता है। मूसा की प्रार्थना यहाँ बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन हम एक ऐसे परमेश्वर को देखते हैं जो प्रेम करना और क्षमा करना जारी रखता है।

एक ऐसा परमेश्वर जो दयालु, दयावान, धैर्यवान और प्रेममय है। और वे इसे देखते हैं, और वे प्रार्थना में इसे पहचानते हैं, वे इस परमेश्वर की स्तुति करते हैं जिसने इस्राएल की परवाह की और उसे चुना। इतना ही नहीं, बल्कि परमेश्वर ने इस्राएल का नेतृत्व किया, फिर से, उन आयतों में जिन्हें हमने अभी पढ़ा है।

दिन में बादल के खंभे के माध्यम से और रात में आग के खंभे के माध्यम से। और आप कह सकते हैं, वाह, ये लोग अब परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे और उसकी पूजा करेंगे। नहीं, वास्तव में प्रार्थना हमें याद दिलाती है कि उन्होंने आगे क्या किया।

यहाँ तक कि जब उन्होंने अपने लिए सोने का बछड़ा बनाया और कहा, 'यह तुम्हारा परमेश्वर है जो हमें मिस्र से निकाल लाया और उसने बड़ी निन्दा की। तू और तेरी महान दया ने उन्हें जंगल में नहीं छोड़ा।' ज़रा सोचिए सोने के बछड़े का पाप कितना गंभीर था।

इस्राएल और यहोवा के कहने के बाद, मैं करता हूँ, मैं करता हूँ, हम वाचा के प्रति वफ़ादार रहेंगे। इस्राएलियों ने सोने का बछड़ा बनाया और सोने के बछड़े की पूजा की। उन्हें यह विचार कहाँ से मिला? खैर, उन्हें यह मिस्रियों से मिला।

भगवान एपिस से, जो एक बैल के रूप में भगवान था। और उन्होंने कहा, यह वह भगवान है जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले गया। जैसे ही वे कहते हैं, मैं करता हूँ, वे दूसरे देवताओं के पीछे चले जाते हैं।

यह पाप कितना गंभीर था? कुछ लोग कहेंगे, यह अपनी शादी की रात वेश्या के साथ सोने जैसा है। आपने अभी कहा, मैं करता हूँ। आपने अभी कहा, मैं सोता हूँ, और अपने जीवनसाथी के साथ सोने के बजाय, मैं एक वेश्या के साथ सोने जा रहा हूँ।

यह कितना गंभीर पाप था. क्योंकि यदि आप एक्सोडस पढ़ते हैं, तो उनके कहने के तुरंत बाद, मैं कहता हूं, वे वास्तव में अन्य देवताओं के पीछे जाते हैं। और फिर भी, भगवान ने उनका साथ नहीं छोड़ा।

दिन में मार्ग दिखाने के लिये बादल का खम्भा उनसे दूर न हुआ, और न रात में मार्ग दिखाने के लिये आग का खम्भा उनसे दूर हुआ। **20** तूने उन्हें शिक्षा देने के लिये अपना आत्मा भला दिया, और अपना मन्त्रा उनके मुँह से न रोका, और उनकी प्यास बुझाने के लिये उन्हें जल दिया। **21** तूने जंगल में चालीस वर्ष तक उनका पालन-पोषण किया, और उन्हें किसी वस्तु की घटी न हुई, और न उनके वस्त्र पुराने हुए, और न उनके पांव सूजे।

22 “और तूने उन्हें राज्य और जातियाँ दीं और हर एक कोना उन्हें दे दिया। इस प्रकार उन्होंने हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग के देश पर अधिकार कर लिया।

पुनः, लोगों की अविश्वासिता और परमेश्वर की अपने लोगों का नेतृत्व करने और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की विश्वासयोग्यता के बीच विरोधाभास।

परमेश्वर ने न केवल उन्हें भोजन उपलब्ध कराया, बल्कि उन्होंने उन्हें उनके शत्रुओं पर विजय भी प्रदान की। अध्याय 9 एक सुंदर अनुस्मारक है कि ईश्वर कौन है। परन्तु क्योंकि परमेश्वर प्रेमी और दयालु है, वह इस्राएल को डांटनेवाला भी है।

किसी के लिए सबसे प्यारी चीज़ जो आप कर सकते हैं, वह है उन्हें सच बताना। और यह बिल्कुल वही है जो भगवान करता है। वह उन्हें डाँटता है।

आप बढ़ते चले गए, श्लोक 22 से शुरू करते हुए। हालाँकि वे अविश्वासी थे, बाइबल कहती है,

23 तूने उनकी सन्तान को आकाश के तारों के समान बढ़ाया, और उन्हें उस देश में पहुंचाया, जिसके विषय में तूने उनके पूर्वजों से कहा था कि वे उसमें प्रवेश करें और उसे अपने अधिकार में लें। **24** तब उनके वंशजों ने जाकर देश को अपने अधिकार में कर लिया, और तूने उनके द्वारा देश के निवासी कनानियों को परास्त करके उनके राजाओं और देश के लोगों समेत उन्हें उनके हाथ में कर दिया, कि वे उनसे जो चाहें सो करें। **25** और उन्होंने गढ़वाले नगरों और उपजाऊ भूमि को ले लिया, और सब अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों, खुदे हुए कुओं, दाख की बारियों, जैतून के बगीचों और बहुत से फलदार वृक्षों को अपने अधिकार में कर लिया। और वे खा-खाकर तृप्त हो गए, और हृष्ट-पुष्ट हो गए, और तेरी बड़ी भलाई के कारण आनन्दित हुए।

26 “तौभी वे तेरे विरुद्ध बलवा करने लगे, और तेरी व्यवस्था को तुच्छ जाना, और तेरे नबियों को जो उनको चितौनी देकर तेरी ओर फेरने आए थे, घात किया, और बड़ी निन्दा की।

परमेश्वर ने क्या किया? परमेश्वर ने उन्हें सज़ा दी।

27 इसलिए तूने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में कर दिया, जिन्होंने उन्हें कष्ट दिया। और जब वे कष्ट में थे, तब उन्होंने तेरी दोहाई दी और तूने स्वर्ग से उनकी सुनी, और अपनी बड़ी दया के अनुसार उनके उद्धारकर्ता भेजे जिन्होंने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से बचाया। **28 परन्तु जब उनको** चैन मिला, तब उन्होंने फिर तेरे साम्हने बुराई की, और तूने उनको उनके शत्रुओं के हाथ में कर दिया, और वे उन पर प्रभुता करने लगे। तौभी जब वे फिरकर तेरी दोहाई देते थे, तब तू स्वर्ग से सुनता था, और अपनी दया के अनुसार बार बार उनको छुड़ाता था।

इतिहास का यह सारा पाठ वास्तव में न्यायियों की पुस्तक से जुड़ा है, जहाँ आपको धर्मत्याग का चक्र देखने को मिलता है, जहाँ लोग पाप करते हैं, और परमेश्वर एक उत्पीड़क भेजता है, या तो मिद्यानियों या किसी विदेशी राष्ट्र, कभी-कभी पलिश्टियों को, और फिर लोग क्या करते हैं? फिर लोग परमेश्वर को पुकारते हैं और पश्चाताप करते हैं, और परमेश्वर अपनी दया से एक न्यायाधीश को मुक्ति के लिए भेजता है। याद रखें, वे न्यायाधीश आज के हमारे न्यायाधीशों की तरह नहीं थे, जो काले वस्त्र पहनते हैं और दोषी कहते हैं, दोषी नहीं। नहीं, वे नागरिक नेता थे, वे सैन्य नेता थे, और इन न्यायाधीशों ने उन्हें उनके उत्पीड़न से मुक्त किया।

और लोग क्या करते हैं? फिर वे अपने पाप में लौट जाते हैं, और न्यायियों की पुस्तक में, आपके पास धर्मत्याग के ये सात चक्र हैं, और यही वह है जो यह प्रार्थना लोगों को धर्मत्याग के चक्रों की याद दिलाती है। लेकिन हर बार जब वे परमेश्वर को पुकारते हैं, तो परमेश्वर प्रेमपूर्ण और दयालु होता है और वापस आकर उन्हें मुक्त करता है। और आप उन्हें चेतावनी देते हैं, श्लोक 29 से शुरू करते हुए, ताकि उन्हें वापस आपके कानून की ओर मोड़ सकें।

तौभी उन्होंने अभिमान करके तेरी आज्ञाओं को नहीं माना, वरन तेरे नियमों के विरुद्ध पाप किया, जिन्हें यदि कोई मनुष्य माने, तो उसके कारण जीवित रहेगा; और उन्होंने हठ किया, और हठ किया, और आज्ञा न मानी। **30** तूने बहुत वर्ष तक उनकी सह ली, और अपने आत्मा के द्वारा अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उन्हें चिताता रहा, परन्तु उन्होंने कान न लगाया। इसलिये तूने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में कर दिया। **31** तौभी तूने अपनी बड़ी दयालुता के कारण उनका अन्त नहीं किया, और न उन्हें त्यागा; क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है।

इसलिए धर्मत्याग का चक्र जारी रहा, और न्यायाधीशों के बजाय, भगवान अब भविष्यद्वक्ताओं को भेजते हैं और कहते हैं, देखो, तुमने पाप किया है, मेरी ओर आओ, पश्चाताप करो। लेकिन वे ऐसा नहीं करेंगे, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें निर्वासन में भेज दिया, उनके उत्तरी राज्य को अश्शूरियों के पास भेज दिया, दक्षिणी राज्य को बेबीलोनियों के पास भेज दिया, लेकिन फिर वह उन्हें वापस भूमि पर ले आया। यह सब भगवान के बारे में है।

एक ईश्वर जो पाप को दंड देता है, जो अपने लोगों को डांटता है, लेकिन अंततः एक ईश्वर जो अनुग्रह देता है। श्लोक 38-31, इसी के बारे में बात करता है। तौभी तूने अपनी बड़ी दया के कारण उनका अन्त न किया, और न उनको त्यागा, क्योंकि तू दयालु और दयालु परमेश्वर है।

इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने अतीत में ऐसा किया था, इसलिए अब वे प्रार्थना में परमेश्वर से अपील करते हैं, हे प्रभु, मैं जानता हूँ कि आपने अतीत में ऐसा किया है, वर्तमान में हमारे लिए भी

ऐसा ही करें। इसीलिए श्लोक 32 कहता है,

32 “अब, हे हमारे परमेश्वर, हे महान् पराक्रमी और भययोग्य परमेश्वर, जो अपनी वाचा पालता और करुणा करता है, जो कष्ट हम पर, अर्थात् हमारे राजाओं, हाकिमों, याजकों, भविष्यद्वक्ताओं, पुरखाओं, वरन तेरी सारी प्रजा पर अशशूर के राजाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक पड़े हैं, वे तेरे लिये छोटे न ठहरें। **33** तौभी जो कुछ हम पर बीता, उसके विषय में तू ने धर्मी ठहरकर काम किया है, क्योंकि तू ने सच्चाई से काम किया है, और हम ने दुष्टता से काम किया है। **34** हमारे राजाओं, हाकिमों, याजकों और हमारे पूर्वजों ने न तो तेरी व्यवस्था का पालन किया, और न तेरी आज्ञाओं और चेतावनियों पर ध्यान दिया जो तूने उन्हें दी थीं। **35** अपने राज्य में भी, और तेरी बड़ी भलाई में भी जो तूने उन्हें दी, और उस बड़े और उपजाऊ देश में भी जो तूने उन्हें दिया, उन्होंने तेरी सेवा न की, और न अपने बुरे कामों से फिरे। **36** देख, हम आज दास हैं; जो देश तू ने हमारे पूर्वजों को दिया था कि हम उसकी उपज और अच्छे-अच्छे उपहार भोगें, उसी में हम दास हैं। **37** और उसकी भरपूर उपज उन राजाओं के हाथ में जाती है, जिन्हें तूने हमारे पापों के कारण हम पर नियुक्त किया है। वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर अपनी इच्छा के अनुसार शासन करते हैं, और हम बड़े संकट में हैं।

38 “ इन सब बातों के कारण हम लिखित रूप में एक दृढ़ वाचा बाँधते हैं; उस मुहरबंद दस्तावेज़ पर हमारे हाकिमों, लेवियों और याजकों के नाम हैं।

तो वास्तव में प्रार्थना इस विचार के साथ समाप्त होती है कि, अरे, इन सब के कारण, हम फिर से वाचा बनाने के लिए तैयार हैं। और हम न केवल वाचा बनाने के लिए तैयार हैं, बल्कि हम बिंदीदार रेखा पर हस्ताक्षर करने के लिए भी तैयार हैं।

हम इसे सील करना चाहते हैं, और हम इस प्रतिबद्धता को लिखित रूप में दिखाना चाहते हैं। लेकिन अगर आप पीछे जाएं, तो वास्तव में पूरा अध्याय ईश्वर के बारे में है। यह ईश्वर के कार्य का एक अच्छा सारांश है, कि ईश्वर कौन है और उसने क्या किया है।

वह एक ईश्वर है, न केवल एक सृष्टिकर्ता ईश्वर, बल्कि वह एक ऐसा ईश्वर है जो अपने लोगों के साथ वाचा बाँधता है। वह एक ऐसा ईश्वर है जो अपने लोगों की प्रार्थना सुनता है। और उन्हें मिस्र से बाहर निकालने के लिए, उसे बहुत सारे संकेत और चमत्कार करने पड़े।

लेकिन केवल इतना ही नहीं, परमेश्वर उन्हें नियम भी देता है। बाइबल कहती है, अच्छे नियम। वह उनका नेतृत्व करता है, उन्हें स्वर्ग से मन्ना देता है, अपनी आत्मा से उनका मार्गदर्शन करता है, अपने लोगों को सहारा देता है, और अंततः परमेश्वर उन्हें विजय देता है।

उन्होंने कहा कि परमेश्वर कौन है और उसने क्या किया है, इस कारण हम एक वाचा पर हस्ताक्षर करना चाहते हैं। हम वापस जाना चाहते हैं और हम वादों को लिखना चाहते हैं, और हम वाचा पर मुहर लगाना चाहते हैं।

इसलिए अध्याय 10 वाचा, हस्ताक्षरकर्ताओं, वादों और शर्तों के बारे में है।

हकल्याह के बेटे नहेमायाह, जकर्याह और यहाँ के अन्य लोगों के नाम मिलेंगे। लेकिन सूची में 21 पुजारी, 17 लेवी और 44 आम नेता शामिल हैं। इन सभी को यहाँ अध्याय 10 में सूचीबद्ध किया गया है।

वे परमेश्वर के साथ एक वाचा बाँधना चाहते हैं। और इन वादों में वे वादे भी कर रहे हैं, इस अनुबंध में वे वादे भी कर रहे हैं। और दिलचस्प बात यह है कि ये वादे बिल्कुल नए नहीं हैं।

उन्होंने ये प्रतिज्ञाएँ पहले भी की थीं, श्लोक 28 और 29।

28 “बाकी लोग, अर्थात् याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये, मन्दिर के सेवक, और वे सब जो परमेश्वर की व्यवस्था के लिये देश देश के लोगों से अलग हो गए हैं, अपनी पत्नियों, अपने बेटों, बेटियों, वे सब जिनके पास ज्ञान और समझ है, **29** अपने भाइयों और सरदारों के साथ मिल जाओ, और शाप दो, और शपथ खाओ, कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्था पर चलेंगे जो परमेश्वर के दास मूसा ने दी है, और हमारे प्रभु यहोवा की सब आज्ञाओं और उसके नियमों और विधियों का पालन और पालन करेंगे। .

देख, उन्होंने व्यवस्था सुनी, और अब उन्होंने कहा, हम व्यवस्था का पालन करना चाहते हैं, और वाचा बान्धना चाहते हैं।

और हम इसे सिर्फ शब्दों में ही नहीं बनाना चाहते, बल्कि इसे एक दस्तावेज़ में सील करना चाहते हैं। और लोगों की शपथ को एक शाप से भी पुष्ट किया गया। विलियमसन ने अपनी टिप्पणी में कहा है कि यह संभवतः किसी तरह के न्याय की औपचारिक स्वीकृति थी, जिसके बारे में वे जानते थे कि अगर वे अपने वचन की शर्तों का उल्लंघन करेंगे तो यह न्यायोचित रूप से उन पर पड़ेगा।

वे क्या करने का वादा करते हैं? खैर, शर्तें 30 से 39 आयतों में हैं, और फिर से अंतर्जातीय विवाह से संबंधित हैं। हम अपनी बेटियों को देश के लोगों को नहीं देंगे और न ही उनकी बेटियों को अपने बेटों के लिए लेंगे। और अगर देश के लोग सब्त के दिन सामान या कोई अनाज लेकर आते हैं, तो हम उनसे सब्त के दिन या किसी पवित्र दिन पर कुछ नहीं खरीदेंगे।

देखिए, यहाँ क्या होता है, शर्तें कुछ चीज़ों से जुड़ी हैं। सबसे पहले, अंतर्जातीय विवाह से। फिर से, दूसरे देशों के साथ यह अंतर्जातीय विवाह एक समस्या रही है।

और अब वे कहते हैं, फिर से, हम एक वाचा करते हैं कि हम अपनी बेटियों को देश के लोगों को नहीं देंगे या उनकी बेटियों को अपने बेटों के लिए नहीं लेंगे। फिर से, यह पहली बार नहीं है जब अंतर्जातीय विवाह के मुद्दे को संबोधित किया जा रहा है, लेकिन इसे वापस लाया जा रहा है। लेकिन ध्यान दें, यह उससे भी आगे जाता है।

जब आप परमेश्वर के साथ वाचा बाँधते हैं, जब परिवर्तन दिखाई देता है, तो आप व्यापार कैसे करते हैं, यह बदल जाता है। और यही यहाँ पद 31 में होता है।

यदि देश के लोग सब्ज के दिन माल या अनाज लाते हैं, तो हम सब्ज के दिन उनसे कुछ नहीं खरीदेंगे।

यह एक पवित्र दिन है। देखिए, जब कोई बदलाव होता है, तो जीवन का हर पहलू बदल जाता है। व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि वे भगवान को जो देते हैं, वह भी बदल जाता है।

और वे अपने पैसे के साथ जो करते हैं वह बदल जाता है। श्लोक 32 में आपके पास यही है।

हम परमेश्वर के घर की सेवा के लिए शेकेल का एक तिहाई हिस्सा, वार्षिक रूप से देने का दायित्व अपने ऊपर लेते हैं।

अब, यहाँ कुछ दिलचस्प है। कानून कहता है आधा शेकेल, लेकिन ये लोग कहते हैं एक तिहाई शेकेल। अब, इसे मौद्रिक प्रणाली के कारण बहुत आसानी से समझाया जा सकता है।

फारस में धन प्रणाली अतीत की तुलना में भिन्न रही होगी। तो शायद यह अमेरिकी डॉलर बनाम यूरो जैसा है। वे एक जैसे नहीं हैं।

इसलिए शायद यहाँ आधे से एक तिहाई में बदलाव हुआ है। लेकिन उन्होंने कहा, हम भगवान के घर की सेवा के लिए, शेकेल के लिए, अनाज के लिए, मंदिर में होने वाली हर चीज़ के लिए पैसा देना चाहते हैं।

श्लोक 35, वे कह रहे हैं, हम हर साल जमीन के पहले फल और हर पेड़ के पहले फल को भगवान के घर में लाने के लिए खुद को बाध्य करते हैं।

यह कोई नई बात नहीं थी। यह व्यवस्था में था। लेकिन अब वे वाचा बाँधते हैं कि वे वापस जाएँगे और प्रभु के भवन में जो कुछ भी उन्हें संभालना है, उसे संभालेंगे।

इतना ही नहीं, श्लोक 38 कहता है, हम दशमांश को सामने लाएँगे। फिर से, कानून, वे दशमांश को फिर से स्थापित करेंगे। देखिए, जब आप परमेश्वर की आज्ञा मानने का अनुबंध करते हैं, तो रिश्तों में, व्यापार में, आप अपने पैसे के साथ क्या करते हैं, सब कुछ बदल जाता है।

उन्होंने कहा, और अंतिम वचन कुंजी है, हम अपने परमेश्वर के भवन की उपेक्षा नहीं करेंगे। अपने बारे में सोचो। आप अपने पैसे से क्या करते हैं? क्या आपको लगता है कि यह ईश्वर के समक्ष सही है कि आप चर्च को जितना देते हैं उससे अधिक केबल टीवी के लिए भुगतान करें? क्या यह सही है कि आप अपने फ़ोन बिल के लिए मिशनरियों को दिए जाने वाले बिल से अधिक भुगतान करें? मुझे नहीं पता।

आपको भगवान से पहले खुद से पूछने की जरूरत है। मैं आपके लिए इसका उत्तर नहीं दे सकता, और आप मेरे लिए इसका उत्तर नहीं दे सकते। लेकिन हम यहां एक प्रतिबद्धता, एक अनुबंध देखते हैं।

और वे न केवल वाचा बनाना चाहते हैं, बल्कि वे इसे सील करने जा रहे हैं, और वे इस पर हस्ताक्षर करने जा रहे हैं। और लोग वही करना चाहते हैं जो सही है, क्योंकि जब आप परमेश्वर के वचन के सामने होते हैं, तो परमेश्वर का वचन, जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक कहती है, सक्रिय और जीवित है, प्रभावशाली है। और यही वह यहाँ कर रहा है, कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन कर रहा है, जो रिश्तों में, उनके व्यवसाय करने के तरीके में, परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए धन के साथ उनके व्यवहार में, और उनके धन के साथ उनके व्यवहार में दिखाई देते हैं।

परिवर्तन ऐसा होना चाहिए जो सिर्फ अंदर से ही नहीं बल्कि बाहर से भी दिखाई दे।

यह एज्रा और नहेम्याह पर डॉ. टिबेरियस राटा की शिक्षा है। यह सत्र 10, नहेम्याह 9-10 है।